रात्रिक्लास 11.4.68

बाप बच्चों से पूछते हैं यह है स्प्रीचुअल ईश्वरीय यूनिवर्सिटी। इसमें बच्चों को क्या मिलता है? बताओ दो अक्षर में। (मुक्ति और जीवनमुक्ति) यह राइट है। सुख और शान्ति। यहां है दुःख। .... सुख और दुःख चह चक्र तो समझ लिया है। शान्ति के लिए रड़ियां मारते रहते हैं। हीरो–हीरोइन का पार्ट तुम ही बजाते हो। तुम्हारा नाम सभी से बाला है जिसको कोई नहीं जानते। बाप आकर ब्रह्मा कुमार–कुमारियों को पढ़ाते हैं, जिससे शान्ति और सुख मिलता है। विश्व में शान्ति और सुख अभी ही मिलता है। बाप ही आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तुम स्वर्ग हेवेन के मालिक बन रहे हो। और सहज कितना है। बाप का बनने से। बा(प) का बनने से यह पद मिलता है। अभी प्रश्न क्या पूछेंगे? बाप को जानने से वर्सा को जान लेते हैं। बाकी जानने का कुछ रहता नहीं। ड्रामा को भी समझ जाते हैं। एक्ट बिल्कुल एक्युरेट चलता है। त्यौहार सभी संगमयुग की.... महिमा है। बेहद के बाप जो एक्टीविटी करते हैं उनकी त्यौहार मनाई जाती है। भक्ति अनराइटियस बनाते है। बाप राइटियस बनाते हैं। बच्चों की बुद्धि में है बाबा हमको सुल्टा बनाते हैं। रावणराज्य में उल्टा बन जाते हैं। पुजारी बन पड़ते हैं। तुम जो कुछ करते हो राइट करते हो। सभी को बतलाना चाहिए शिवबाबा सम्मुख कहते हैं। शिवजयन्ति तो है ना। शिवबाबा आते हैं, अवतार लेते हैं। स्वर्ग स्थापन करेंगे। नर्क का विनाश भी ज़रूर करेंगे। तुम जो स्थापना करते हो फिर पालना भी ज़रूर करेंगे। तुम हो अननोन वारियर्स। बट वेरी वेल नोन। बाप कहते हैं मेरे को कहते ही हो ज्ञान का सागर। बाकी है भक्ति। दिल में आता है बाबा से हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। बाबा भी समझते हैं बच्चे स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। वह है हद की बात। यह है बेहद की बात। तुम हद और बेहद दोनों को ही जानते हो। दूसरे सिर्फ़ हद को जानते हैं। बेहद को जानते ही नहीं। अनुभव भी यही सुनावेंगे हम बाप के बने हैं बाप से बेहद का वर्सा लेने। हर 5000 वर्ष बाद फिर (आकर) तुम अपना–2 वर्सा लेंगे। फिर सीढ़ी उतरेंगे। फिर चढ़ेंगे। आना और जाना। सीढ़ी उतरना और चढ़ना। बच्चे कहां मूँझते हो तो पूछ सकते हैं; परन्तु मूंझने की कोई बात ही नहीं। हर बात में पुरुषार्थ ज़रूर होता है। इस समय की पुरुषार्थ (से) ही हमारी प्रारब्ध अविनाशी बन जाती है। वहां है ही सुख। यहां है दुःखधाम। शान्तिधाम, सुखधाम और दुःखधाम। यह तुम चक्र लगाते रहते हो। बच्चों को यह अनुभव बताना चाहिए बाप की मुरली सम्मुख सुनने से क्या फायदा होता है। यहां गोरखधंधा आदि तो है नहीं। घर में जाने से फिर वह रिफ्रेशमेन्ट ठंडी हो जाती है। सात रोज़ की भट्ठी यहां है। कोई भी खिट–पिट की बात ही नहीं; इसलिए बच्चे आते हैं रिफ्रेश होने। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।

बापदादा के हस्ते महावाक्यः– सभी सर्विसेबुल बच्चों को न सिर्फ़ बच्चों को बल्कि स्टूडेन्ट्स को रूहानी बाप दादा का याद प्यार। बाद समाचार कि बच्चे खूब समझते हैं कि पावन दैवी गुणों सहित बेहद के बाप के(से) बेहद का वर्सा पा रहे हैं श्रीमत पर। अभी स्टूडेन्ट को पढ़ना है सो तो जहां भी बच्चे हों मुरली मिलती है ..... आदि धारण करना है। अभी कोई कहे दैवीगुण नहीं धारण कर सकते हैं, शराब–कबाब खाने बिगर रह नहीं सकते हैं तो ज़रूर समझना है कि बहुत कम पद प्रजा जन्म–जन्मांतर लिए है। बड़ा घाटा पहनना है। व्यापारी जो इतना बड़ा घाटा सहे सो पूरा अनाड़ी समझा जाता है। खुद भी समझ सकते हैं सच्ची कमाई 21 जन्म की बन रही है। बाकी झूठी कमाई विनाश हुये कि हुये। अच्छा, बच्चों से विदाई।